पाठ 9 वाराणसी की यात्रा

गर्मियों की छुट्टियाँ थीं। मैं अपनी बुआ से मिलने वाराणसी गया। वाराणसी हमारे गाँव से काफी दूर है। रेलगाड़ी से जाना पड़ता है। पूरे बावन रुपये का टिकट लगा था। दीदी भी मेरे साथ थीं।

रेलगाड़ी से यात्रा करने में मुझे बहुत आनंद आया। छुक–छुक, छुक–छुक, धड़–धड़ाम, धड़–धड़, धड़ाम ..... शूँ .....। ऐसा लग रहा था मानो पेड़ भी हमारे साथ चल रहे हों। स्टेशन पर पहुँचे तो बहुत भीड़ थी। बाहर आकर दीदी ने रिक्शा किया। जल्दी ही हम बुआ के घर पहुँच गए।

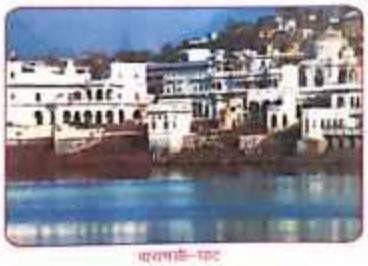

वाराणसी–घाट

बुआ दरवाज़े पर ही खड़ी मिल गईं। उन्होंने खुशी से हमें गले लगाया। मेरी फुफेरी बहन शैली और भाई राजू भी घर पर ही थे। दोनों हमें देखकर बहुत खुश हुए। शैली, राजू और बुआ हमारे घर के सारे लोगों के बारे में पूछते रहे।

बुआ ने हमें खाने को रसगुल्ला दिया। इतना बड़ा रसगुल्ला ! पर मैं एक ही बार में खा गया ! मेरा मुँह रस से भर गया।

सुबह तैयार होकर हम गोदौलिया घूमने गए। चारों ओर मेले जैसी चहल–पहल थी। ऊँचे–ऊँचे मंदिर जैसे आसमान को छू रहे हों। घंटे – घड़ियालों की आवाज़ें

आ रही थीं, टन–टनन–टन। विश्वनाथ मंदिर में आरती हो रही थी। सब लोग फूल और प्रसाद लेकर मंदिर जा रहे थे। मैं भी फूल लेकर गया। भीड़ अधिक थी, फूल चढ़ाने में बहुत समय लगा। मंदिर के बाहर एक आदमी मुँह से कोई बाजा बजा रहा था। यह शहनाई बजा रहा है मोनू–दीदी ने बताया। विश्वप्रसिद्ध शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ वाराणसी के ही थे– दीदी बोलीं।

इसके बाद हम दशाश्वमेध घाट गए और नाव में बैठे। इतनी बड़ी नाव! जब वह चल रही थी तो हल्के–हल्के हिचकोले ले रही थी। नाव को चलाने वाला छप–छपाक छप–छपाक करके अपना चप्पू चला रहा था।

गंगा के किनारे–किनारे घाट बने थे। बड़ी–बड़ी छतरियाँ लगी हुई थीं। बहुत सारी सीढ़ियाँ बनी थीं। उन पर बैठे कुछ लोग नहा रहे थे। एक मंदिर लग रहा था जैसे पानी में अब गिरा, अब गिरा। "यह टेढ़ा मंदिर है मोनू !", दीदी ने बताया। कैसे रुका हुआ होगा वह मन्दिर ? मैं सोचता रहा।

दोपहर को हम बहुत बड़े विद्यालय में गए। दीदी बोलीं, "मोनू, यह बनारस हिंदू विश्वविद्यालय है। इसे महामना मदन मोहन मालवीय ने बनवाया था। यहाँ देश–विदेश से लोग पढ़ने आते हैं।" दीदी और मैं संकटमोचन मंदिर भी गए।

सारनाथ–बौद्ध स्तूप

भूख लगी थी। दीदी ने गरम जलेबियाँ खिलाईं। लस्सी भी पिलाई। कुछ लोग बाटी–चोखा खा रहे थे। सत्तू वाले ठेले पर भी खूब भीड़ लगी थी।

अगले दिन हम सारनाथ गए। वहाँ हमने एक बड़ी इमारत देखी। वहाँ बड़ी–बड़ी मूर्तियाँ और बहुत सी पुरानी वस्तुएँ रखीं थीं। दीदी ने बताया कि उसे संग्रहालय कहते हैं। संग्रहालय में अशोक की लाट भी रखी थी जिसके ऊपरी हिस्से में चार सिंह बने थे। दीदी ने बताया कि हमारे देश का राष्ट्र चिह्न उसी से लिया गया है। हमने बौद्ध मंदिर और बौद्ध स्तूप भी देखे।

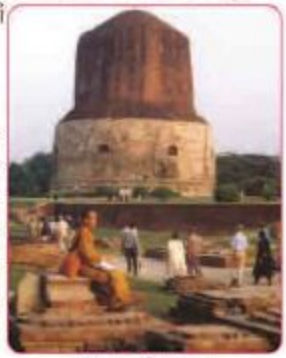

लौटते समय हम रेलगाडी का इंजन बनाने का कारखाना भी देखने गए।

शाम को हम बाजार घूमने निकले। लहुराबीर में घूमते–घूमते रात हो गई। हम वापस घर लौट आए। रात को शैली और राजू से खूब बातें हुईं।

सुबह हमें लौटना था। बुआ ने गले लगाते हुए हमसे अगली छुट्टियों में आने को कहा। शैली और राजू दूर तक हमें जाते देखते रहे।

अभ्यास

1. उत्तर लिखो –
   क. मोनू वाराणसी कैसे गया ?
   ख. मोनू ने वाराणसी में क्या–क्या देखा ?
   ग. रेल के अलावा टिकट और कहाँ–कहाँ लगता है ?
2. बताओ, कैसी आवाज आती है
   मोटरकार, बस, हवाई जहाज, ट्रैक्टर, टैम्पो से।
3. तुम भी छुट्टी में कहीं घूमने गए होगे। अपनी कॉपी में लिखो–
   - कहाँ गए थे ?
   - क्या–क्या तैयारियाँ की थीं ?
   - कौन–कौन गए थे ?
   - किन–किन साधनों से गए थे ?
   - कौन सी चीजें/बातें बहुत अच्छी लगीं ?
   - क्या अच्छा नहीं लगा ?
4. पढ़ो – छुट्टियाँ, रिक्शा, दशाश्वमेध, सीढ़ियाँ, संग्रहालय।

बच्चों से उनके द्वारा की गई यात्रा के अनुभव लिखवाएँ। रेल, बस आदि के टिकट दिखाकर टिकट में दिए गए विवरणों के बारे में जानकारी दें। नजदीकी स्थलों का भ्रमण कराएँ।